

11 स्कूली शिक्षा में कठपुतली का उपयोग

डॉ. मिरेला फ़ोर्स्बर्ग अह्ल्क्रोना

शिक्षा के औजार के तौर पर कठपुतलियाँ विचारों, भावनाओं और अनुभवों के जीवन्त प्रतीक का काम करती हैं। शोधात्मक रुचियाँ कठपुतली के अर्थ और महत्त्व की ओर निर्देशित होती हैं–मानव गतिविधि में इस गतिविधि के व्यक्तिपरक उत्पाद द्वारा। मेरे अनुसन्धान का उद्देश्य कठपुतली की सम्प्रेषण सम्बन्धी विशेषताओं पर रौशनी डालते हुए स्कूल–पूर्व और स्कूली शिक्षा में कठपुतली की एक मध्यस्थ औजार के सापेक्ष, भाषाई और क्रियात्मक सम्भावनाओं के बारे में ज्ञान विकसित करना है।

पपेट यानी कठपुतली क्या है?

शब्द पपेट लातिनी शब्द 'प्युपा' से निकला है, जिसका एक अर्थ छोटा जीव भी है। अर्थ इस पर भी निर्भर करता है कि एक दर्शक पपेट को–जो हिलता है, बोलता है, और अपने प्रदर्शन में क्रियाओं और विषयवस्तु के मध्यस्थ का काम करता है–किस नजर से देखता है। जब कठपुतली एक व्यक्ति–विशेष के रूप में भावनाएँ और विचार व्यक्त करती है तो उसे एक ऐसे 'वास्तविक' इन्सान के तौर पर देखना आसान हो जाता है जिसके साथ हम सम्प्रेषण कर सकते हैं।

एक वस्तु के सजीव हो जाने का विचार लोगों को हमेशा रोमांचित करता रहा है और उनकी कल्पना को चुनौती देता रहा है। कठपुतली (एक दस्ताना, रस्सी या छड़–कठपुतली) एक भौतिक हस्तकृति है जिसमें विशेष हरकतें तो शामिल की जाती हैं लेकिन उसके प्रयोग से सम्बन्धित उद्देश्य और



गतिविधियाँ नहीं। हरकत, बोल और रूपरंग जैसी बाहरी विशेषताओं के माध्यम से पैदा किए गए दृष्टि के प्रभाव के जरिए कठपुतली की क्रियाएँ दर्शकों के विचारों, भावनाओं और सम्बद्धताओं को जागृत कर सकती हैं।

हमारी मदद से कठपुतली जीना शुरू कर सकती है, वह कर सकती है जो अकल्पनीय है–यानी उसका क्रिया में होना और जीवित होने का भ्रम पैदा करना। कठपुतली की सम्प्रेषण की सम्भावनाएँ सर्वप्रथम तो किसी व्यक्ति के साथ सम्बन्ध में उभरकर आ सकती हैं; सम्प्रेषण के माध्यम से ही एक कठपुतली के अस्तित्व को स्वीकारा और विकसित किया जा सकता है। ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो सम्प्रेषण से सम्बन्धित कठपुतली की विशेषताओं को अलग–अलग क्षेत्रों में अलग–अलग उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल किया गया है, जैसे कि थियेटर, शिक्षा, चिकित्सा और राजनीति के क्षेत्रों में।

एक कठपुतली का शरीर और बनावट आमतौर पर तकनीकी नियमों द्वारा निर्धारित होते हैं। लेकिन शिक्षा में कठपुतली के प्रयोग के लिए विषयवस्तु और उद्देश्य कई तरह के शिक्षाप्रद प्रश्नों से निर्धारित होते हैं, जैसे–क्या, कैसे, क्यों और किसके लिए? इसका अर्थ है कि एक ही कठपुतली को अलग–अलग उद्देश्यों और अलग–अलग शैक्षिक परिप्रेक्ष्यों के लिए प्रयोग किया जा सकता है।

"वास्तविक संसार" और सम्भव काल्पनिक संसारों के बीच

सम्बन्ध स्थापित करने की कठपुतली की क्षमता का अर्थ है कि दर्शक के सामने जो कुछ भी उस क्षण हो रहा होता है, वह होता भी है और नहीं भी होता—कठपुतली सच में जिन्दा नहीं है मगर वह उस पल में जो कहती और करती है, वह वास्तविक है। 'जो है' और 'जो नहीं है' के बीच 'जो हो सकता है' का सेतु कठपुतली के द्वन्द्व को प्रदर्शित और उसका प्रतिनिधित्व करता है। यह अभिनय कर रही कठपुतली की मूल विशेषता और व्यवहार है। कठपुतली की क्रियाओं को द्विदृष्टि की अवधारणा के तहत भी समझा जा सकता है, जिसका अर्थ है कि एक कठपुतली को दर्शकों के द्वारा एक ही समय पर दो अलग–अलग तरह से देखा जाता है—अभिनय में एक पात्र के तौर पर और एक काल्पनिक जीवन के रूप में।

अनुसन्धान की सैद्धान्तिक बुनियाद सामाजिक–सांस्कृतिक परम्परा में स्थित होती है। इस परम्परा में साधनों के प्रयोग को एक व्यक्तिगत और सामाजिक क्रिया के तौर पर लिया जाता है जिसमें सामाजिक तथा सांस्कृतिक प्रथाओं का अधिग्रहण अन्य व्यक्तियों, अन्य सन्दर्भों और गतिविधियों के सम्बन्ध में होता है। शिक्षा में कठपुतली का प्रयोग ऐसी क्रियाओं को लेकर होता है जो व्यक्तिगत भी होती हैं और सामूहिक भी। साथ ही वे एक–दूसरे के साथ गतिशील तरीके से सम्बद्ध भी होती हैं। अनुसन्धान की रुचि सम्प्रेषण की प्रक्रियाओं की विषयवस्तु पर केन्द्रित रहती है, जहाँ कठपुतली शिक्षक और बच्चों के बीच मध्यस्थ–साधन का काम करती है। शोधात्मक रुचि का ध्यान शैक्षिक सन्दर्भ में कठपुतली में छुपी सम्प्रेषण की सम्भावनाओं, विशेषताओं और अवसरों को उजागर करने पर भी रहता है। मध्यस्थता और 'मध्यस्थता की क्रिया' वह कड़ी है जो सोच–विचार तथा अवधारणाओं के बनने और उभरने में मददगार होती है। मध्यस्थता का सम्बन्ध इस बात से होता है कि बच्चे किस तरह कठपुतली के साथ, उसके बारे में और उसकी वजह से अपने अवधारणात्मक संसार को रचते और उसके मध्यस्थ बनते हैं, ज्ञान को विकसित करते हैं, अनुभवों का आदान–प्रदान करते हैं, सम्बन्ध स्थापित करते हैं और नई गतिविधियाँ रचते हैं (फ़ॉर्स्बर्ग अहल्क्रोना, 2012)।

शिक्षक, कठपुतली की रचना और मध्यस्थता

शिक्षाप्रद परिप्रेक्ष्य से देखें तो एक साधन के तौर पर कठपुतली की रचना मूल तौर पर बौद्धिक होती है क्योंकि वह शिक्षक द्वारा उसके काम पर हुए चिन्तन पर आधारित होती है और इस पर भी कि किस तरह कठपुतली की मदद से कुछ विशेष आवश्यकताओं को एक प्रक्रिया में से गुजारकर पूरा किया जा सकता है। कुछ रचने की प्रक्रिया रचनात्मक गतिविधि–चक्र से सम्बद्ध होती है—यह एक व्यक्ति की बौद्धिक और भावनात्मक काबिलियत में अन्त:क्रिया है, यानी विचार और भावनाएँ, दोनों रचनात्मक क्रिया के बनने में योगदान देते हैं (वायगॉत्स्की, 1971)।

यदि एक शिक्षक कठपुतलियाँ बना सकता/सकती है तो वह कठपुतली को उपयुक्त शैक्षिक उद्देश्यों और विषयवस्तुओं पर आधारित साधन के रूप में भी बना और प्रयोग कर सकता/सकती है। यह दिन–प्रतिदिन के जीवन में चिह्नित की गई स्थितियों पर प्रतिक्रिया के बारे में हो सकता है या फिर उस विशेष सामग्री के बारे में जिसे शिक्षक बच्चों के साथ काम में विकसित करना चाहता है। कठपुतली के प्रयोग में शिक्षक का व्यावसायिक/पेशेवर इरादा कठपुतली की सौन्दर्यशास्त्रीय रचना और विषयवस्तु का आधार होता है। एक कठपुतली की रचना भावनात्मक होती है क्योंकि वह शिक्षक की व्यक्तिगत प्रतिबद्धता पर आधारित होती है। बौद्धिक और भावनात्मक, दोनों तत्व कठपुतली के कलात्मक डिजाइन पर प्रभाव डालते हैं। यानी उसके सौन्दर्यशास्त्रीय डिजाइन पर—रंगों और सामग्री का चुनाव बस यूँ ही नहीं होता बल्कि शिक्षक की शिक्षाप्रद रणनीति



का हिस्सा होता है, और रंग—सामग्री आदि के माध्यम से ही एक खास इरादा या सन्देश हम तक पहुँचता है। बच्चों के साथ परस्पर अन्त:क्रिया में ही कुछ अन्य सम्भावित, छुपी हुई विशेषताएँ भी विकसित होती हैं। दूसरे शब्दों में, एक साधन के तौर पर कठपुतली स्वत:स्फूर्त कल्पना के एक बहुत ही छोटे हिस्से को लागू करती है। कहा जा सकता है कि अर्थ—निर्माण के माध्यम से, मध्यस्थता के साधन के तौर पर कठपुतली एक बौद्धिक और भावनात्मक अन्त:क्रिया का उत्पाद है।

शिक्षक अपने व्यवहार को कैसे प्रभावित करें? इस बात से सम्बद्ध विचार शुरुआत में तो बस गतिविधि के लिए एक पूर्व शर्त के तौर पर आते हैं। अलेक्सी लियोंतिएव (कोल, 2009) के मुताबिक कर्ता (शिक्षक) तो जरूरत से संचालित होता है लेकिन पात्र (कठपुतली) उद्देश्यों की प्रेरक शक्ति के माध्यम से गतिविधि की प्रक्रियाओं को दिशा देता है। जिन परिस्थितियों में शिक्षक कठपुतली के साथ सम्प्रेषण करता है, वे पात्र को जीवन्त बना देती हैं और इसे हम चीजों के पुनर्जीवित होने की संज्ञा दे सकते हैं। चीजों का पुनर्जीवित होना शिक्षक और बच्चों के बीच रिश्ते को विकसित करता और ताकत देता है। यह बच्चों में अन्तर्व्यक्तिपरकता के विकास में भी मददगार होता है, विशेष तौर से तब जब बच्चे और शिक्षक दोनों ध्यान के केन्द्र में होते हैं और जब उनके इरादे और भावनात्मक मन: स्थितियाँ भी एक से होते हैं। इस प्रकार की गतिविधियाँ बाहरी और आन्तरिक, दोनों तरह की क्रियाओं को बोधात्मक और भावनात्मक बनाती हैं।



विषय के रूप में कठपुतली और उसमें छुपी सम्बन्धात्मक सम्भावनाएँ

एक विषय के तौर पर कठपुतली का भावनात्मक मूल्य बच्चों के वार्तालाप और कठपुतली के बारे में बात करने के उनके लहजे में झलकता और विकसित होता है। यहाँ भावनात्मक मूल्य न केवल बच्चों द्वारा अभिव्यक्त भावनाओं के अस्तित्व की ओर इशारा करता है बल्कि इसमें कठपुतली के 'वास्तव में होने' से सम्बद्ध अर्थ के बारे में वार्ता/मोल—तोल भी शामिल है—और वह भी जो उस अर्थ में निहित है। जब ल्योंतिएव 'उद्देश्यों की प्रेरक शक्ति' के बारे में लिखते हैं, तो वे उस प्रक्रिया का जिक्र कर रहे हैं जिसके तहत पात्र की छुपी हुई विशेषताएँ विभिन्न सम्प्रेषणीय क्रियाओं की प्रेरक शक्ति की परस्पर अन्त: क्रिया को रचती हैं। कठपुतली पर इस बात को लागू करें तो इसका अर्थ है कि कठपुतली की विशेष क्रियाएँ 'छुपी हुई हैं' और वे तब ही सामने आती हैं जब कठपुतली हाथ पर 'क्रिया में आती है', और अन्त:क्रिया में आती है। कठपुतली की छुपी हुई सम्बन्धात्मक सम्भावना तब उभरती है जब बच्चे, कठपुतली के साथ सम्बन्ध में भावनात्मक मूल्य विकसित करते हैं और ज्ञान से सम्बद्ध तथा भावनात्मक उद्देश्यों पर आधारित सम्प्रेषणीय क्रियाएँ करते हैं जो वास्तविक और कल्पित संसारों के बीच की सीमाओं को लांघ जाती हैं।

मध्यस्थता और कठपुतली की सम्भावित भाषाई शक्ति सामाजिक—सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य के ढाँचे के अन्तर्गत एक बुनियादी मान्यता यह है कि भाषा समाज और व्यक्तियों के बीच एक कड़ी का काम करती है, क्योंकि वह एक व्यक्ति को मदद करती है कि वह अन्य लोगों के परिप्रेक्ष्यों में भागीदार हो पाए; यह मदद भी करती है कि वह मध्यस्थता में आए अनुभवों में भागीदार हो पाए। लेव वायगॉत्स्की (1986) के अनुसार भाषा लोगों के बीच और लोगों के स्वयं के भीतर कड़ी का काम करती है — यानी बाह्य सम्प्रेषण और आन्तरिक सोच—विचार के बीच कड़ी का काम करती है।

विवरण के रूप में सम्प्रेषण बस घटनाओं का सीधा—साधारण

प्रस्तुतीकरण मात्र नहीं होता। वह किसी के स्वयं के परिप्रेक्ष्यों, उद्देश्यों, मूल्यों, और समकालीन तथा स्थानिक दिशा—निर्धारण को भी गले लगाता है—ये वे पक्ष हैं जिन्हें जेरोम ब्रुनर (1990) 'चेतना की दृश्यभूमि' कहते हैं। ब्रुनर (1986, 2002) तथा बर्ट वैन ओर्स (2003) के अनुसार वर्णन करना और वृत्तान्त अनुभवों को व्यवस्थित करने का ही एक तरीका है। इन्हें सामाजिक परिघटनाओं की तरह देखा जा सकता है और सम्प्रेषण के एक ऐसे मूल रूप की तरह, जिसके माध्यम से लोग विचार और भावनाएँ व्यक्त करते हैं।

कठपुतली में छुपी भाषाई शक्ति की सम्भावना तब उभरकर आई जब उससे सम्प्रेषण करते हुए बच्चे सांस्कृतिक और सामाजिक अनुभवों के मध्यस्थ बने, उन्होंने ज्ञान और ज्ञानार्जन की अपनी अवधारणाओं को व्यक्त किया तथा भाषा के संकेतात्मक, चिह्नात्मक और आलंकारिक कृत्यों को विक. सित किया। आमतौर पर कठपुतली के साथ बच्चों की मौखिक और गैर—मौखिक गतिविधियों में आज के ज्वलन्त मुद्दे प्रस्तुत हुए लेकिन वास्तविक और कल्पित संसारों की सीमाओं से बाहर निकलकर कठपुतलियाँ एक सम्भावित भविष्य की परिकल्पनाओं को भी जन्म देती हैं।

त्रिपक्षीय रिश्ते और कठपुतली की क्रिया—सम्बद्ध सम्भावित शक्ति

त्रिपक्षीय रिश्ते शिक्षक, कठपुतली और बच्चों के बीच सम्प्रेषण के दौरान विकसित होने वाले सम्बन्ध हैं—ये सामाजिक ज्ञानार्जन की गतिविधियों में भाग लेने, साझा ज्ञान रचने और विकसित करने का एक तरीका हैं। सम्प्रेषण एक साझा चीज यानी कठपुतली पर और किन्हीं सन्दर्भों में उसकी क्रियाओं पर आधारित होता है। त्रिपक्षीय रिश्ता शैक्षिक प्रक्रिया में अर्थ—निर्माण के माध्यम से पात्र की व्यक्तिपरक और वस्तुपरक प्रक्रिया से सम्बद्ध होता है। वायगॉत्स्की (1986) शैक्षिक प्रक्रिया को एक भागीदारीपूर्ण प्रक्रिया और अन्त:क्रिया मानते हैं जिसमें स्वत:स्फूर्त और वैज्ञानिक अवधारणात्मक सोच—विचार के बीच आदान—प्रदान विकसित होता है। और यह सम्बद्ध पक्षों के बीच परस्पर सहायता तथा अन्त: क्रिया से हो पाता है।

कठपुतली में छुपी क्रिया से सम्बद्ध सम्भावना एवं शक्ति इन त्रिपक्षीय रिश्तों के विकास के माध्यम से निकलकर आई, और इसे हम वायगॉत्स्की के 'निकटतम विकास के क्षेत्र' (वायगॉत्स्की, 1978) के अर्थ में भी व्याख्यायित कर सकते हैं। कठपुतली में छुपी क्रिया—सम्बद्ध सम्भावना एवं शक्ति बच्चों के खेल में और सामूहिक तथा रचनात्मक क्रियाओं के माध्यम से उभरकर आती है। बच्चों की प्रस्तुतियाँ और कठपुतलियों के साथ खेल उनके द्वारा स्थितियों को समझने की कोशिश को दर्शाते हैं, जहाँ कल्पना और वृत्तान्त महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

References:

1. Bruner, J. (1986). Actual minds, possible worlds. Cambridge, MA: Harvard University Press.
2. Bruner, J. (1990). Acts of Meaning. Cambridge, MA: Harvard University Press.
3. Bruner, J. (2002). Making Stories. Law, Literature, Life. Cambridge, MA: Harvard University Press.
4. Cole, M. (2009). The development of Mind. Selected Works of Aleksei Nikolaevich Leontyev. Marxists Internet Archive. P:O:Box1541; Pacifica,CA 94044; USA
5. Forsberg Ahlcrona, M. (2012). The puppet´s communicative potential as a mediating tool in preschool. DOI: 10.1007/s13158-012-0060-3, inpress. International Journal of Early Childhood
6. van Oers, B. (Ed.). (2003). Narratives of Childhood. Theoretical and Practical Explorations for the Innovation of Early Childhood Education.Amsterdam: VU University Press.
7. Vygotsky, L: S. (1971). The Psychology of Art. (The Massachusetts Institute of Technology). Cambridge, MA: MIT Press.
8. Vygotsky, L. S. (1986). Thought and language. Cambridge, MA: MIT Press.
9. Vygotsky, L.S. (1978). Mind in society: The development of higher psychological processes. Cambridge, MA: Harvard University Press.



डॉ. मिरेला फ़ोर्स्बर्ग अह्लक्रोना *युनिवर्सिटी ऑफ स्कोव्द, स्वीडन में लेक्चरर तथा शोधकर्ता हैं। एक शोधकर्ता के रूप में वे ऐसी परियोजनाओं में भाग लेती हैं जिनका उद्देश्य कठपुतलियों को एक शैक्षिक साधन तथा माध्यम के रूप में इस्तेमाल करते हुए नए तौर–तरीकों का आविष्कार करना और रचना है। प्रारम्भिक शिशु शिक्षा में वे शिक्षण में मध्यस्थ साधन के तौर पर कठपुतली तथा सम्प्रेषण के एक अलग तरीके के रूप में कठपुतली–खेल से सम्बद्ध पाठ्यक्रम पढ़ाती हैं। उनसे* mirella@viovio.se *पर सम्पर्क किया जा सकता है।* ***अनुवादः*** *रमणीक मोहन*